DOI: 10.51220/hjssh.v2i1.10

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 2 pp. 79-89 , 2007

'सल्तनतकालीन सुल्तानों के कटेहर अभियानों के स्वरूप का विश्लेषणपरक मूल्यांकन'

सुनील कुमार

इतिहास विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी (गढ़वाल)

ABSTRACT

पौराणिक व प्राचीन कालीन उत्तर पांचाल एवं आधुनिक रूहेलखण्ड क्षेत्र कटेहर माना जाता है। सन् १६७४ ई० के लगभग इस क्षेत्र में राजपूतों का आगमन हुआ तथा वे कटेहर राजपूत कहलाए। प्रस्तुत शोधपत्र सल्तनतकालीन सुल्तानों के कटेहर अभियानों के स्वरूप का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

Key words :- Sultans and Katehar; struggle analysis.

सल्तनतकालीन उत्तर भारत में कटेहर नामक क्षेत्र का उल्लेख अनेक बार प्राप्त होता है। कटेहर से तात्पर्य पौराणिक व प्राचीन कालीन उत्तर पांचाल तथा आधुनिक रुहेलखण्ड से है। कटेहर क्षेत्र में ११७४ ई० के लगभग राजपूतों का आगमन हुआ। इस इलाके में बसने व रहने के कारण वे कटेहरिया राजपूत कहलाए। राजपूतों के आगमन से कटेहर क्षेत्र में जागृति आयी। समकालीन व परवर्ती मध्ययुगीन इतिहासकारों–मिनहाज–उस–सिराज, जियाउद्दीन बरनी, शम्स–ए–सिराज अफ़ीफ़, अमीर खुसरो, याहिया बिन अहमद, फरिश्ता, निजामुद्दीन अहमद, हसन निजामी, इब्नबतूता आदि ने अपने इतिहास लेखन में कटेहर का न केवल अनेक बार नामोल्लेख किया है, अपितु कहीं–कहीं विस्तार से कटेहर में होने वाले सल्तनत की सेनाओं और कटेहरियों के सम्पर्क एवं संघर्ष का विवरण भी दिया है। इन विवरणों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि सल्तनत की स्थापना से तुर्कों के सम्पर्क में आने के बाद सम्पूर्ण सल्तनत काल में कटेहर क्षेत्र संघर्षों का केन्द्र रहा। सल्तनत के तीन सौ बीस वर्ष के काल में लगभग बत्तीस बार कटेहर में इस प्रकार के सम्पर्क – संघर्ष का उल्लेख प्राप्त होता है।

कटेहर मुख्यतया नदियों और जंगलों से आच्छादित क्षेत्र था। रामगंगा जिसे मध्यकालीन इतिहासकारों ने 'रहब के नाम से वर्णित किया है, अरैल, देओहा, खन्नोत, खोह, कोसी आदि इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां थीं। मध्यकाल के ऐतिहासिक घटनाक्रम की अनेक घटनाएं रामगंगा, अरैल और दे ओहा नदियों के तट पर हुई हैं। आंवला तथा अहिच्छत्र के जंगल भी इसलिए महत्त्पूर्ण रहे क्योंकि

© SHARAD

इनमें ही कटेहरिया राजपूतों व सल्तनत की सेनाओं के बीच अनेक संघर्ष हुए। यह क्षेत्र राजधानी दिल्ली के निकट था, आर्थिक रूप से समृद्ध था और इसी कारण इस इलाके को सल्तनत की जीवन रेखा स्वीकार किया गया है।[1] कटेहर की आर्थिक मामलों में भागीदारी के सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि कटेहर की प्रमुख टकसालें आँवला, बदायूँ, सम्भल, बरेली और मुरादाबाद में थी। बदायूँ को टकसाल में बना नासिरुद्दीन महमूद के काल का चांदी का सिक्का इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसमें सुल्तान के नाम के साथ खलीफ़ा का नाम भी है।[2]

कटेहर की विशिष्ट आर्थिक स्थिति की भांति ही कटेहर में जंगलों के बाहुल्य ने प्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक घटनाक्रम को और परोक्ष रूप से इस इलाके की प्रशासनिक व्यवस्था को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जहाँ एक ओर यह जंगल सुल्तानों के मनपसन्द शिकारगाह बने रहे, वहीं कटेहरियों की शरण स्थली भी। इस कारण इन जंगलों में हुए संघर्षो ने सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था को भी समय–समय पर प्रभावित किया।

नासिरुद्दीन महमूद के शासन काल में कटेहरियों ने अपना प्रभाव बदायूँ, सम्भल और आँवला तक बढ़ा लिया था और वे बदायूँ तथा सम्भल के शाही ठिकानों पर छापे भी मारने लगे थे, जो दिल्ली के शासन के लिए खुली चुनौती था। इस कारण १२५४ ई० में सुल्तान की सेना पहाड़ियों के सहारे प्रयाण करते हुए रामगंगा के तट पर पहुँच गयी। कटेहर की सेना व सुल्तान की सेना में अनेक संघर्ष हुए। इन लड़ाइयों में तंकलवाली के निकट हुए संघर्ष में कटेहरियों द्वारा तुर्को के एक प्रमुख योद्धा मलिक राजीउल्मुल्क इज्जुद्दीन दरम्शी को मारा गया।[3] सल्तनत की सेना द्वारा किया गया दमनचक्र भी कटेहरियों को हतोत्साह न कर सका। डॉ० हबीबुल्ला ने कटेहर दमन की समीक्षा करते हुए लिखा है कि इस अवसर पर वे उचित ढंग से दण्डित तो किए गए, परन्तु प्रभावकारी रूप से पराजित नहीं किए गए। बलबन के शासन के प्रारम्भ में वे और भी बड़ी सेना लेकर प्रकट हुए[4]।

१२६७ ई० में कटेहरियों ने वहाँ के मुस्लिम घरों को लूट लिया। कटेहर प्रतिरोध का प्रभाव इतना व्यापक था कि बदायूँ और अमरोहा के निकटवर्ती प्रदेशों में भी मुस्लिम शासन की अवहेलना होने लगी। इस घटनाक्रम की सूचना बदायूँ तथा अमरोहा के गवर्नर द्वारा सुल्तान को प्राप्त हुयी।[5] सूचना मिलते ही सुल्तान बलबन कम्पिल और पटियाली से दिल्ली वापस लौटा। कटेहर की घटनाओं से सुल्तान चिन्तित था, परन्तु उसने ऐसा प्रदर्शित नहीं किया। उसने सेना के मुख्य भाग को तैयार रहने का आदेश दिया परन्तु अभियान का लक्ष्य नहीं बताया गया। वह एकाएक आक्रमण करके कटेहर को नष्ट करना चाहता था। अतः उसने सर्वसाधारण में यह खबर फैला दी कि वह शिकार के उद्देश्य से 'कोहपाया' की पहाड़ियों में जा रहा है।[6] कोहपाया से तात्पर्य हिमालय की तराई से

है। बलबन सेना के साथ रवाना हुआ, उसके साथ पाँच हजार तीरन्दाज थे। इन्हें आदेश दिया गया कि वे कटेहर को जलाकर नष्ट कर दें। बरनी ने वर्णित किया है कि विद्रोहियों के रक्त की धाराएं बहने लगीं। प्रत्येक गाँव और जंगल के समीप मृतकों के ढेर लग गए। इस कठोरता के कारण विद्रोहियों में आतंक फैल गया और उनमें से बहुत से अधीन हो गए और सारे जिले को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया और लूट के माल से शाही सेना धनवान बन गयी और बदायूँ के लोग सन्तुष्ट हो गये। फिर लकड़हारों को जंगलों में मार्ग बनाने के लिए भेजा। इन मार्गों पर होकर जब सेना निकली तो उसने हिन्दुओं का वध किया।[७]

निजामी सामूहिक नरसंहार के बरनी के कथन पर अविश्वास प्रकट करते हुए लिखते हैं कि 'बरनी ऐसे लिखता है जैसे बलबन ने समस्त पुरुष आबादी का नरसंहार करने के आदेश दिए थे। किन्तु यह कोरी बकवास है, क्योंकि सुल्तान वहाँ किसानों की उन लोगों से रक्षा करने गया था, जो उन्हें लूटते थे'।[८] अतः निजामी के अनुसार किसानों की लुटेरों से रक्षा करने बलबन कटेहर गया था, परन्तु बरनी लिखता है कि 'सारे जिले को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया गया और लूट के माल से शाही सेना धनवान बन गई।'[९] हबीबुल्ला ने भी स्वीकार किया है कि कटेहरियों को दिया गया दण्ड अमानवीय और अत्यन्त कठोर था।[१०]

उपरोक्त घटनाक्रम संकेत करता है कि बलबन के शासनकाल में १२६७ ई० में कटेहर क्षेत्र में और वहाँ के जंगलों में काफी उथल–पुथल हुयी। जंगलों का बहुतायत में काटा जाना और वहाँ मृतकों के शवों का ढेर लग जाना पर्यावरण को हुए नुकसान और वातावरण में फैले प्रदूषण की ओर संकेत करता है। इस दमनचक्र का परोक्ष परिणाम यह हुआ कि कटेहरिया और अधिक पूर्व की ओर बढ़े और उन्होंने रामगंगा तथा देओहा नदियों के मध्य भाग पर अधिकार कर लिया।[११] इस घटनाक्रम के पश्चात् पर्याप्त समय तक कटेहर में शांति रही।

मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में कटेहर सम्बन्धी संक्षिप्त विवरण प्राप्त होता है। १३३८ ई० के पहले दिल्ली सल्तनत को अकाल का सामना करना पड़ा था। वर्षा न होने के कारण कृषि उत्पादन बहुत कम हो गया था जिस कारण जनता बहुत दुखी थी। यहाँ तक कि दिल्ली में अनाज का भाव बढ़ता गया और लोग बहुत बड़ी संख्या में नष्ट होने लगे। बरनी के अनुसार इस आपात स्थिति में सुल्तान बदायूँ तथा कटेहर की ओर चारागाह की खोज में एक दो बार गया और कई दिनों तक भ्रमण करके देहली लौट आया। अकाल के कारण कष्टों में वृद्धि होती गयी। लोग भूख से तथा चौपाये चारे के अभाव में मरते ही गए।[१२] इस विवरण से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि कटेहर का इलाका हरा–भरा क्षेत्र था। हरे–भरे चारागाहों[१३] से युक्त इस क्षेत्र में इसी कारण सुल्तान मुहम्मद

बिन तुगलक का आगमन हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि अकाल का प्रकोप इतना अधिक था कि एक–दो बार बदायूँ और कटेहर से पशुओं के लिए चारा आदि प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया, परन्तु सुल्तान को इसमें विशेष सफलता नहीं मिली।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सुल्तानों ने बलबन के समय से ही कटेहरियों के दमन के लिए बिजनौर, मन्दावर, सम्भल और बदायूँ में सैनिक चौकियां स्थापित की थीं। इस दबाव के कारण कटेहरिया अपना प्रसार न कर सके और दिल्ली सल्तनत के प्रति उनका संघर्ष सुरक्षात्मक ही रहा। ज्यों–ज्यों सुल्तान कटेहरियों की भूमि पर अधिकार करते गए त्यों–त्यों कटेहरियों को भाबर तराई के अस्वास्थ्यकर प्रदेश में शरण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। रामगंगा की पश्चिमी और पूर्वी दोनों उपत्यकाओं में वर्तमान गढ़वाल और नैनीताल जिलों के भाबर तराई प्रदेश में कटेहरियों को फैलना पड़ा। इस कारण कटेहर की सीमा भाबर तराई में उस प्रदेश से मिल गयी, जहाँ शीतकाल में पर्वतवासी अपने पशुओं को लेकर पहुँचते थे।[१४]

समकालीन परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए यह मत उचित प्रतीत होता है कि वनों के अन्दर प्रविष्ट होकर कटेहरियों ने थापलों पर बसना और कृषि करना प्रारम्भ कर दिया। भाबर तराई में शताब्दियों से उजाड़ पड़े प्रदेश में धीरे–धीरे खेत बनने लगे। गाँव और छोटे–छोटे व्यापारिक केन्द्र बसने लगे। बिजनौर गजेटियर के अनुसार इस क्षेत्र में आज भी वनों के अन्तर्गत दूर–दूर तक आमों के अति प्राचीन उद्यान, शिलाओं पर बनी मूर्तियां, पक्के कूप तथा उजाड़ बस्तियों के अन्य अवशेष मिलते हैं, जो शदियों पूर्व बसी जनता की समृद्धि की पुष्टि करते हैं। विद्वानों का अनुमान है कि भाबर तराई के घने वनों के अन्दर इन बस्तियों की स्थापना सम्भवतः सम्भल और बदायूँ के सूबेदारों के आतंक से भागे हुए हिन्दू गढ़पतियों द्वारा हुई थी। [१५]

फीरोज़ तुगलक के समय बदायूँ की शिक का मुक्ती सय्यद मुहम्मद था। दूसरी ओर कटेहरियों का मुकद्दम खड़गू था, जिसे कटेहर का राजा स्वीकार किया गया है।[१६] खड़गू ने पीलीभीत जिले का पश्चिमी आधा भाग जीता और उस पर अधिकार कर लिया था। वहाँ के निवासी अहीरों तथा जंगल में रहने वाली अर्द्धसभ्य जातियों को बाहर खदेड़ा था। इस प्रकार इस क्षेत्र पर अधिकार करने के बाद दिल्ली के सुल्तान का उन पर नाममात्र का अधिकार रह गया।[१७] इस परिप्रेक्ष्य में १३७६ ई० में खड़गू ने बदायूँ की शिक के मुक्ती सय्यद मुहम्मद तथा उसके भाई सय्यद अलाउद्दीन को अपने निवास स्थान पर प्रीतिभोज में आमंत्रित किया और विश्वासघात करके उनकी हत्या करवा दी।[१८] इस परिस्थिति में प्रारम्भ में खड़गू व बदायूँ के मुक्ती की सेना के बीच संघर्ष अवश्य हुआ होगा और १३८०–८१ ई० में सुल्तान फीरोज तुगलक व खड़गू की सेना में संघर्ष के

विवरण भी उपलब्ध होते हैं। विमल चन्द्र लाहा ने भी कटेहरियों और सुल्तान की सेनाओं के संघर्ष स्थल को आँवला और अहिच्छत्र के बीच के जंगली प्रदेश को माना है।[१९] नेविल का मत है कि फीरोज़ तुगलक ने बदायूँ से बीसलपुर तक के सारे इलाके को नष्ट कर दिया और उसे शिकारगाह बनाया।[२०]

स्पष्ट है कि कटेहरियों और सुल्तान की सेना के बीच मुख्य संघर्ष आँवला और अहिच्छत्र (रामनगर) के जंगलों के एक छोटे से क्षेत्र में हुआ, परन्तु कटेहरियों को समूल नष्ट करने के प्रयास में बदायूँ से बीसलपुर (पीलीभीत) तक का इलाका नष्ट कर दिया गया। इतना होने पर भी सय्यद भाइयों के हत्याकाण्ड का प्रमुख नायक खड़गू पकड़ा नहीं जा सका। फरिश्ता के अनुसार खड़गू ने भाग कर महताओं के देश अर्थात कुमाऊँ के पर्वतों में शरण ली। सुल्तान ने उन पर आक्रमण किया और लगभग तेईस हजार पर्वत वासियों को बन्दी बनाया गया और दास बनाकर रखा गया। चूंकि सुल्तान खड़गू के विषय में कोई भी जानकारी प्राप्त करने में असफल रहा, अतः उसने मलिक दाउद नामक एक अफगान अधिकारी को सैनिकों की टुकड़ी सहित सम्भल में नियुक्त किया और आदेश दिया कि वह प्रतिवर्ष कटेहर को तब तक तहस–नहस करता रहे जब तक कि खड़गू पकड़ में न आ जाए। अपने आदेशों का पालन देखने के लिए सुल्तान प्रतिवर्ष कटेहर में जाता रहा और आगामी छः वर्षों तक वहां न तो कोई रह पाया और न ही एक इंच भूमि पर उपज हुई।[२१]

जिस पर्वतीय प्रदेश में खड़गू ने आश्रय लिया था, उसे तारीख–ए–मुबारक शाही में कुमायों के पर्वतीय प्रदेश के अन्तर्गत महतरों (महताओं) का प्रदेश कहा गया है।[२२] तेरहवीं–चौदहवीं शताब्दी में कमादेश को तथा उसके दक्षिण में स्थित भाबर–तराई को कुमायों कहा जाने लगा था। खड़गू को खोज निकालने के प्रयास में तेईस हजार नर–नारियों को बन्दी बनाने से स्पष्ट है कि जनसंख्या चाहे कितनी भी घनी रही हो, तो भी सेना ने इतने अधिक व्यक्तियों को बन्दी बनाने के लिए कई सौ ग्रामों में संहारलीला मचायी होगी।[२३] जनसंख्या के घनत्व को ध्यान में रखा जाय तो अनुमान लगाया जा सकता है कि इस दमनचक्र से तराई और पर्वत का बहुत बड़ा भू भाग प्रभावित हुआ था। कुमाऊँ की काव्यात्मक गौरव गाथा (जागर) में खड़गू के इस प्रसंग का उल्लेख प्राप्त होता है।

शम्से–सिराज अफ़ीफ़ ने, जो सुल्तान के साथ प्रायः शिकार पर जाता था, लिखा है कि सुल्तान द्वारा कटेहरियों का पीछा मुख्यतः बदायूँ और आँवला के पास के क्षेत्र में किया गया था, जहाँ हिरन, नीलगाय आदि जानवर बहुतायत से पाए जाते हैं और इससे बड़ा कोई खाली स्थान दिल्ली के निकट नहीं था। सुल्तान के आदेश पर ही इस स्थान को खाली रखा गया था और शिकारगाह बनाया गया था, अन्यथा फीरोज़ के उन्नत और उदार शासनकाल में शीघ्र ही यह एक आबादी वाला और हरा–भरा क्षेत्र हो जाता।[२४] स्पष्ट है कि इन छः वर्षों में कटेहर में एक भी एकड़ भूमि पर हल

नहीं चला। एक भी व्यक्ति अपनी झोपड़ी में नहीं सोया। लगभग पाँच–छः वर्षों की दमनात्मक कार्रवाइयों के बावजूद भी जब खड़गू न पकड़ा जा सका तो सुल्तान ने कटेहरियों पर और अधिक दबाव बनाए रखने के लिये १३८५–८६ ई० में बदायूँ से सात कोस की दूरी पर बियोली में एक किले का निर्माण कराया और उसका नाम फीरोज़पुर रखा,परन्तु जिन लोगों ने सुल्तान के अत्याचारों को सहा था वे व्यंग्यवश इसे पुर–ए–आखिरीन या अन्तिम नगर कहा करते थे[२५]।

कुछ समय तक कटेहरिया दबाव में रहे परन्तु तैमूर के आक्रमण से उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर कटेहरियों ने फीरोज़ तुगलक के शिकारगाह आंवला के जंगल पर अधिकार कर लिया और जगह–जगह पर बस गए। इन्होंने नए गाँव भी बसाए जिनमें प्रमुख रूप से अतरछेंड़ी और ठाकुरगढ़ आते हैं। अतरछेंड़ी आज भी कटेहरियों की एक घनी बस्ती है। तुगलकवंश के शासन के अन्तिम चरण में दिल्ली में पुनः स्थापित सुल्तान महमूद द्वारा मनोरंजन एवं शिकार हेतु कटेहर में आने का उल्लेख मिलता है। न केवल सुल्तान वरन् उसके सेनानायक भी शिकार हेतु इस क्षेत्र में आते रहे। १४१० ई० में सुल्तान महमूद कटेहर गया और वहां शिकार करके राजधानी लौट आया।[२६] १४१२ ई० में पुनः सुल्तान महमूद द्वारा कटेहर में शिकार के लिए जाने का उल्लेख मिलता है, जिसके पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

सय्यद सुल्तानों के काल के प्रारम्भ १४१४ ई० से सल्तनत और कटेहर के बीच संघर्ष का एक नया दौर प्रारम्भ होता है। परस्पर वैमनस्य के अतिरिक्त इसका एक कारण यह भी स्वीकार किया गया है कि कई अन्य क्षेत्रें के साथ कटेहर ने भी अपनी भौगोलिक स्थिति का पूर्ण लाभ उठाया और अपनी दुराग्रही क्रियाओं द्वारा केन्द्रीय सत्ता दूर रखी।[२७] तारीख–ए–मुबारक शाही के अनुसार १४१४–१५ ई० में सुल्तान खिज्र खां को ताजुलमुल्क की अधीनता में एक सेना कटेहर भेजनी पड़ी। ताजुलमुल्क ने वहाँ प्रवेश कर लूटमार की और अत्यधिक काफिरों का विध्वंस किया। कटेहर का राय हर सिंह भागकर आंवला की घाटी में पहुँचा। आंवला आधुनिक बरेली जिले में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है और सल्तनतकाल में आंवला का महत्त्व कटेहरिया राजपूतों की राजधानी के समान ही रहा है। ताजुलमुल्क ने हरसिंह को घेर लिया और हरसिंह को खिराज, रुपया और कर (महसूल, औमाल, औखिदमाती) अदा करने को मजबूर होना पड़ा।[२८] इस अभियान के दौरान ताजुलमुल्क की सेना ने आंवला के जंगलों में लूटमार की और इस कारण वहां के निवासी कटेहरियों को बहुत हानि उठानी पड़ी। परन्तु यह सिलसिला यहीं नहीं रुका। १४१६ ई० में पुनः ताजुलमुल्क को कटेहर को अधीनता में लाने के लिए भेजा गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन अवसरों पर हर सिंह ने कूटनीति के तहत सल्तनत की अधीनता

स्वीकार की थी क्योंकि १४१८–१६ ई० में उसने पुनः विद्रोह कर दिया। याहिया बिन अहमद के अनुसार १४१८–१६ ई० में रायाते आला (खिज्र खाँ) ने मलिक ताजुलमुल्क को बहुत बड़ी सेना देकर कटेहर के शासक हर सिंह के विद्रोह को शांत करने के लिए भेजा। जब इस्लामी सेना ने गंगा नदी पार की, तो हर सिंह ने कटेहर की विलायत को नष्ट कर दिया और आँवला के जंगल में जो चौबीस कोस के घेरे में है, प्रविष्ट हो गया। इस्लामी सेना ने उपर्युक्त जंगल के निकट पड़ाव किया। हरसिंह जंगल में घिर गया और उसे युद्ध करना पड़ा। ईश्वर ने इस्लामी सेना को विजय प्रदान की। अभागे काफिरों की समस्त धन सम्पति अस्त्रशस्त्र तथा घोड़े इस्लामी सेना को प्राप्त हो गए। हर सिंह भागकर कुमाऊँ पर्वत की ओर चला गया। दूसरे दिन बीस हजार सवार उसका पीछा करने के लिए भेजे गए। मलिक ताजुलमुल्क ने स्वयं सेना तथा शिविर सहित उस स्थान पर पड़ाव किया। इस्लामी सेना ने रहब नदी को पार किया और कुमाऊँ पर्वत तक उसका पीछा किया। हर सिंह पर्वत में प्रविष्ट हुआ। इस्लामी सेना को अत्यधिक लूट की सम्पति प्राप्त हुई। वे वहाँ से पाँचवें दिन वापिस हो गए।[२६]

उपरोक्त घटनाक्रम का विष्लेशण करने पर ज्ञात होता है कि हर सिंह का दमन करने के लिए बीस हजार सवारों से कहीं अधिक सेना कटेहर में भेजी गयी। अतः यह विद्रोह बहुत व्यापक था। परन्तु इतने भीषण दमनचक्र के लिए हर सिंह व अन्य कटेहरिया तैयार नहीं थे। इसी कारण उन्हें आँवला के शाही जंगल में शरण लेनी पड़ी और कुमाऊँ के पर्वतों की ओर भागना पड़ा। कुमाऊँ की पहाड़ियों में हरसिंह का पीछा करने वाली सेना को हरसिंह नहीं मिला। पाँच दिन तक हर सिंह का पीछा किया जाता रहा और मार्ग के निवासियों को ताजुलमुल्क की सेना के हाथ अपार कष्ट उठाने पड़े।[३०] यह घटनाक्रम जहां एक ओर कटेहरियों की प्रतिरोधात्मक प्रवृत्ति को दर्शाता है वहीं दूसरी ओर यह आभास भी कराता है कि प्रतिवर्ष होने वाले इन संघर्षों ने न केवल कटेहरियों को अपार धन–धान्य की हानि करायी होगी, अपितु हजारों स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों ने अपने प्राण भी गवांये होंगे। प्रतिवर्ष होने वाले इस दमनचक्र ने उनके घर, सामान और रहने व छिपने के जंगल नष्ट कर दिए। पर्यावरण निश्चित रूप से प्रभावित हुआ होगा।

लोदी सुल्तानों के काल में कटेहर से सम्बन्धित विवरण संक्षेप में ही प्राप्त होता है। बहलोल लोदी के शासन काल में कटेहर, रहब नदी व बिसौली का उल्लेख दर्शाता है कि सल्तनत की सेनाएं कटेहर के आस–पास मंडराती रही। सिकन्दर लोदी के काल (१४८९–१५१७) में १४९१–९२ ई० में कटेहर में जमींदारों ने बहुत बड़ी संख्या में एकत्र होकर सुल्तान से युद्ध किया। अन्त में पराजित होकर वे तलवार के घाट उतार दिए गए और छिन्न–भिन्न हो गए। सुल्तान के सैनिकों को अत्यधिक धन सम्पति प्राप्त हुई।[३१] इस घटना के पश्चात् १४९३–९४ ई० में एक बार सिकन्दर लोदी ने शिकार

का आनन्द लेने के लिए कटेहर का पुनः दौरा किया था।[३२]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सल्तनत काल (१२०६–१५२६ ई०) में कटेहर का जंगलों से युक्त प्रदेश सल्तनत के राजनैतिक घटनाक्रम को प्रभावित करता रहा और राजनैतिक घटनाक्रम कटेहर के पर्यावरण को प्रभावित करता रहा। विद्रोहियों के दमन के लिए की गयी कार्रवाई और सुल्तानों की शिकार यात्रएं यहाँ के निवासियों के जनजीवन को प्रभावित करती रहीं।

सुल्तानों का शिकार पर जाना किसी उत्सव से कम नहीं होता था, इसके लिए अत्यधिक तैयारी की ज़ाती थी और बहुत साज सामान के साथ शिकार के लिए प्रस्थान किया जाता था। शम्से सिराज अफ़ीफ़ ने फीरोज तुगलक की शिकार यात्रओं की जो झांकी प्रस्तुत की हैं उससे सहज ही अनुमान लग जाता है कि १३८०–८१ ई० के बाद प्रतिवर्ष फीरोज़ ने कटेहर में जो शिकार यात्राएं आयोजित की उनका स्वरूप किस प्रकार का रहता रहा होगा। अफ़ीफ़ के अनुसार–

'जब सुल्तान फीरोज शिकार की सवारी के लिए निकलता, तो शिकार के मरातिब (शाही विशेष चिह्न बाजे आदि) के पैंतालीस निशान साथ जाते। फर्राशखाने में से एक तहलीज, एक बारगाह, एक ख्वाबगाह, एक बड़ा सफेद गुम्बद, जो कि सुल्तान का विशेष अविष्कार था, साथ जाते थे। जब सुल्तान फीरोज़शाह यात्र करता तो मराबित के आगे बढ़ जाता था और सेना लेकर समस्त ख़ानों, मलिकों तथा शाहज़ादों के साथ जाता था। मोर के पंख के दो भाले, जो कि विशेषकर सुल्तान तुगलक की ईज़ाद थे, शहंशाह की खास सेना के दाएं और बाएं चलते थे। उन दोनों भालों के नीचे दायीं ओर हिंसक जन्तु होते थे। बायीं ओर पक्षियों का शिकार करने वाले पक्षी होते थे।''सुल्तान फीरोज़शाह के पास असंख्य घोड़े थे। उन समस्त घोड़ों को पाँच पायगाह (अश्वशाला) में बांधा जाता था, जिन्हें पाँच महल कहते थे। इनमें से एक पायगाह शिकाराखाना थी। बारह सौ घोड़े शिकरों से सम्बन्धित थे। शिकरेखाने का प्रत्येक अधिकारी एक बहुत बड़ा अमीर होता था। प्रत्येक शिकरों के पालन–पोषण का विशेष प्रयत्न किया जाता था। वह सेना में शिकार के लिए परह (शिकार के लिए एक प्रकार का घेरा) तैयार कराने का बड़ा प्रयत्न किया करता था। जिस प्रकार सुल्तान फीरोज़ शिकारगाह में परह तैयार करता था, उस प्रकार के परह भूतपूर्व सुल्तानों में से बहुत कम लोग तैयार कराते होंगे। यदि पिछले सुल्तानों में से किसी को परह तैयार कराने की इच्छा होती थी, तो वह तुरन्त परह तैयार करा लेता था। तत्प चात उसी समय परह तोड़ डाला जाता था। सुल्तान फीरोजशाह सात–सात, आठ–आठ दिन परह स्थपित रखता था और नित्य परह के घेरे में शिकार खेलता था।[३३]

अफ़ीफ़ ने जो कि स्वयं सुल्तान के साथ शिकार यात्राओं पर जाता था, वर्णित किया है कि

हिरन, गोर तथा नीलगायों के शिकार के लिए सुल्तान फीरोज़ तुगलक ने बदायूं तथा आंवला को चुन रखा था। प्रत्येक वर्ष वह फीरोजाबाद से शिकार के लिए वहां जाता था। शिकार के स्थल पर पहुँचने पर एक बहुत बड़ा परह तैयार कराया जाता। इस परह में सर्वप्रथम दास फिर घोड़े तथा अन्त में हाथियों को सम्मिलित किया जाता। यदि परह (घेरा) बहुत बड़ा होता तो हाथियों के पहले बुनगाह (शाही शिविर) के सवार उसमें सम्मिलित होते। जब घेरा बनाने के लिए दोनों ओर से चलते–चलते दास, घोड़े, शाही शिविर, हाथी मिल जाते तो घेरा पूरा हो जाता। घेरा पूरा होने का संकेत आग जलाकर निकलने वाले धुएं से घेरे में सम्मिलित लोगों को दिया जाता। यह व्यवस्था घेरे के विस्तार को इंगित करती है।

इसके बाद घेरा छोटा करने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती थी। परह (घेरे) के सवार एक पंक्ति से दो और दो से तीन में होते जाते थे। घेरा छोटा कर तीन चार कोस का कर लिया जाता था। जो परह के घेरे में जिस स्थान पर होता, वहां उतर पड़ा। वहीं पर सरायचे (खेमे) लगा दिये जाते और एक प्रकार से खेमों का ही घेरा बन जाता। खेमों के पीछे शिकारियों के शिविर होते थे। बाजार वाले भी अपने समूह वालों के साथ उतरते थे। इस तरह जब परह का घेरा दृढ़ हो जाता, तो परह के भीतर जानवरों के विषय में पूछताछ की जाती। यदि उसमें कोई सिंह अथवा बबर या भेड़िया होता, तो सर्वप्रथम उसकी फीरोजशाह हत्या करता। जब परह इस प्रकार दष्ढ़ रहता और प्रत्येक प्रकार के शिकार परह में बन्दी हो जाते और उनकी संख्या सहस्रों से भी अधिक हो जाती थीं, तो सुल्तान फीरोजशाह नित्य परह से सवार होकर जाता और पाँच–छः सौ अश्वारोही, शहजादे, खान तथा मलिक सवार होते थे। सुल्तान फ़ीरोज़शाह परह में प्रविष्ट होकर शिकार खेलता था। जब उसकी परह तुड़वाने तथा शेष शिकार को पकड़ने की इच्छा होती तो उसके आदेशानुसार परह में एक अग्निवाण फेंका जाता था और ढोल तथा शहनाई बजाई जाती थी। सभी लोग घुस पड़ते थे और जो शिकार परह के भीतर होता उसे मार डालते ।

अफ़ीफ़ के अनुसार परह के दिनों में शिकार का मांस इतना अधिक हो जाता था कि उससे गंदगी फैल जाती थी। कुछ लोग शिकार के माँस में जीरा लगाकर सुखा लेते थे और दिल्ली ले जाते थे। इस प्रकार फीरोजशाह प्रत्येक वर्ष इस प्रकार के तीर चार परह करता था। तब वह बुनगाह (शाही शिविर) सहित दिल्ली लौट आता था।[३४]

उपरोक्त विवरण कुछ अति शयोक्तिपूर्ण हो सकता है, परन्तु फिर भी बड़ी संख्या में सैनिक, दास, व्यापारी, घोड़े, हाथी और इनके साथ शहजादे, ख़ान और मलिक भी होते थे। इतनी बड़ी संख्या में सुल्तान की सेना का कटेहर में प्रवेश करना, जनसामान्य को आतंकित करने के लिए कम न था।

इन शिकार यात्रओं के मार्ग में पड़ने वाले इलाकों की जनसंख्या को व्यापक रूप से लूटपाट व अन्य दमनात्मक कार्रवाइयां झेलनी पड़ी। ये शिकार यात्राएं भले ही सुल्तान के मनोरंजन का साधन रही हों परन्तु जंगलों के निकट बसने वाली आबादी के लिए कष्टदायक रहती होंगी क्योंकि खान–पान की दैनिक उपयोग की साामग्री को स्थानीय जनता से ही प्राप्त किया जाता रहा होगा।

उपर्युक्त विवरण के विष्लेशण से यह स्पष्ट होता है कि सल्तनत काल में राजधानी दिल्ली के निकट स्थित कटेहर का क्षेत्र सुल्तानों के लिए समस्या बना रहा। जहाँ इस क्षेत्र की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति होने के कारण सुल्तान इसे अपने अधीन बनाए रखने के लिए प्रयत्नरत रहे वहीं कटेहरिया समय–समय पर सल्तनत के विस्तार के विरुद्ध अपना विरोध दर्ज कराते रहे। कभी–कभी यह विद्रोह सरलता से दबा दिए गए परन्तु कभी–कभी इन्हें नियन्त्रण में लाने के लिये कड़े कदम उठाने पड़े और व्यापक सैनिक कार्रवाइयाँ करनी पड़ीं। हजारों की संख्या में सैनिकों द्वारा पीछा किये जाने पर विद्रोही कटेहरियों को निकटवर्ती पर्वतीय क्षेत्र में शरण लेनी पड़ी। पर्वतीय क्षेत्रें तक विशाल सेना द्वारा विद्रोहियों का पीछा किया जाना, हजारों की संख्या में विद्रोहियों को बंदी बनाया जाना आदि घटनायें इस कम घनत्व वाले जनसंख्या क्षेत्र में की गई दमनात्मक कार्रवाइयों के स्वरूप की ओर संकेत करते हैं। एक और तथ्य जो उभर कर सामने आता है वह यह कि अनेक सुल्तानों ने और विशेषकर फीरोज तुगलक ने विभिन्न अवसरों पर शिकार यात्रएं आयोजित कर कटेहर पर अपना प्रभाव बनाए रखने का प्रयास किया। इन शिकार यात्रओं में हजारों लोगों की भागीदारी इनकी व्यापकता की ओर संकेत करती है। इन यात्रओं के माध्यम से परोक्ष रूप से कटेहर में आतंक फैलाना, वहां के निवासियों के दैनन्दिन जीवन को प्रभावित करना, उनके रहने व छिपने के स्थानों को नष्ट करना और सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि विशाल संख्या में शिकार यात्र में आए जनमानस द्वारा वहां के जनजीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया गया। अतः इन दोनों प्रकार की कार्रवाइयों से सल्तनत काल में कटेहर क्षेत्र का जनजीवन तो प्रभावित हुआ ही पर्यावरण और पारिस्थितिकी को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया गया।

सन्दर्भ-

१. रेखा जोशी, फैक्ट्स ऑफ देहली सुल्तानेट, इलाहाबाद १९७८, प ०–३७।

२. नेल्सन राइट, द सुल्तान्स ऑफ देलही – देयर क्वाइनेज एण्ड मेट्रोलोजी, आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, १९३६, प ०–५४.

३. मिनहाजुससिराज, तबकाते नासिरी, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन, अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड द्वितीय, आगरा १९७४, पृ० २५५

४. ए०बी०एम० हबीबुल्ला, द फाउन्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया (हिन्दी), इलाहाबाद १९६१ प० १३३.

५. मुहम्मद अज़ीज़ अहमद ने अपनी पुस्तक 'पालिटिकल हिस्ट्री एण्ड इन्स्टीट्यूशन्स ऑफ द अर्ली टर्किष एम्पायर ऑफ देलही' दिल्ली १९७२ के पृष्ठ २७५ की पाद टिप्पणी संख्या १ में 'तबकाते अकबरी' के पृष्ठ ८५ को उद्घाटन करते हुए गवर्नर का नाम जुबुनी बताया है।

६. जियाउद्दीन बरनी, तारीख–ए–फीरोज शाही, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन, अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड तृतीय, आगरा १९७४, पृ०–७१.

७. उपरोक्त ।

८. मो० हबीब एवं के०ए० निज़ामी,–दिल्ली सुल्तनत भाग–१ (सम्पादित) लेखक के०ए० निज़ामी, लेख– दिल्ली के प्रारम्भिक तुर्क सुल्तान, नई दिल्ली १९७८, पृ०– २३४.

९. जियाउद्दीन बरनी, तारीख–ए–फीरोज़ ाही, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन, अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड तृतीय, आगरा १९७४ पृ०– ७१.

१०. ए०बी०एम० हबीबुल्ला, द फाउन्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया (हिन्दी), इलाहाबाद १९६१, पृ० १४३

११. नेविल, 'पीलीभीत' ए गजेटियर बीइंग वाल्यूम ग्टप्प् ऑफ द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ द यूनाइटेड प्राविन्सेज ऑफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद १९०९, पृ ०–१५२.

१२. जियाउद्दीन बरनी, तारीख–ए–फीरोज शाही, अनु० सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी, तुगलक कालीन भारत, भाग–१, अलीगढ़ १९५६, प० ० ५२–५३.

१३. शम्स–ए–सिराज़ अफ़ीफ़, तारीख–ए–फीरोज़शाही, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड तृतीय, आगरा १९७४, पृ० २५२.

१४. राहुल, कुमाऊँ काशी २०१५ वि०–पृ० ७९.

१५. शिव प्रसाद डबराल, उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग–४, दोगड्डा गढ़वाल २०२८ वि० प० ० १२६ .

१६. सुधीशधर द्विवेदी, द रिलेशन्स ऑफ द राजपूत्स् विद द देलही सुल्तान्स, आगरा १९७८, पृ०–१००.

१७. नेविल, स्टैटिस्टिकल, डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउंट ऑफ द नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज़ ऑफ इण्डिया, पीलीभीत इलाहाबाद १९०९, प० ० १५२.

१८. याहिया बिन अहमद, तारीख–ए–मुबारक ाही अनु० सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी, तुगलककालीन भारत, भाग–दो, अलीगढ़ १९५७, पृ० २०४ य फरिश्ता, तारीख–ए–फरिश्ता, अनु० ब्रिग्ज, खण्ड–प्रथम कलकत्ता १९६६, पृ० २६५.

१६. बी०सी० लाहा, पाँचाल्स एण्ड देयर कैपिटल अहिच्छत्र पृ०–६ .

२०. नेविल, स्टेटिस्टिकल, डिस्किप्टिव एण्ड हिटारिकल एकाउंट ऑफ द नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज़ ऑफ इण्डिया, पीलीभीत इलाहाबाद १६०६, पृ०–१५२.

२१. फरिश्ता, तारीख–ए–फरिश्ता, अनु० ब्रिग्ज खण्ड–प्रथम, कलकत्ता १६६६, पृ० २६५.

२२. याहिया बिन अहमद, तारीख–ए–मुबारकशाही अनु० सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी, तुगलककालीन भारत भाग–दो, अलीगढ़ १६५७, पृ०–२०४।

२३. शिव प्रसाद डबराल, उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग ११, दोगड्डा गढ़वाल २०४४ वि० पृ०–८०

२४. नेविल, स्टेटिस्टिकल, डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउंट ऑफ द नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया, बदायूँ, इलाहाबाद १६०७, प ०–१३७.

२५. याहिया बिन अहमद,तारीख–ए–मुबारक शाही, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन, अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड चतुर्थ, आगरा १६६८, पृ० १२.

२६. उपरोक्त पृ० ३३।

२७. मो० हबीब एवं के०ए० निज़ामी– दिल्ली सुल्तनत भाग–१ (सम्पादित) लेखक–के०ए० निज़ामी, लेख–सय्यद वंश, नई दिल्ली १६७८, पृ०–५४४।

२८. याहियाा बिन अहमद, तारीख–ए–मुबारक शाही, अनु० सैयद अतहर अब्बास रिज़वी, उत्तर तैमूर कालीन भारत, भाग–एक अलीगढ़ १६५८, पृ०–१५.

२९. उपरोक्त, पृ० १८ ।

३०. डॉ० शिवप्रसाद डबराल, उत्तराखण्ड का इतिहास भाग चतुर्थ दोगड्डा गढ़वाल २०२८, वि० पृ०–१४४ एवं डॉ० प्रयाग जो भी, कुमाऊँ गढ़वाल की लोक गाथाओं का विवेचनात्मक अध्ययन, बरेली १६८६–८७, पृ० २३.

३१. ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद, तबकाते अकबरी, अनु० सैयद अतहर अब्बास रिज़वी–उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग–१, अलीगढ़ १६५८, पृ० २१३.

३२. नियामतुल्ला, तारीख–ए–खानजहाँ लोदी, भारत का इतिहास, इलियट डाउसन, अनु० मथुरालाल शर्मा, खण्ड पंचम आगरा १६६६, पृ० ७८.

३३. शम्से सिराज अफ़ीफ़, तारीख–ए–फीरोज शाही, अनु० सैयद अतहर अब्बास रिज़वी, तुगलक कालीन भारत, भाग–दो, अलीगढ़ १६५७, पृ० १२६–१३०.

३४. उपरोक्त पृ० १३१, १३२, १३३.